।। श्री गणेशाय नमः ।।

हिन्दी पाक्षिक Fort Nightly

Baat Hindustan ki

बात हिन्दुस्तान की

Baat Hindustan Ki

R N I No. : WBHIN / 2021 / 84049

• विक्रम संवत 2081 पौष कृष्ण प्रतिपदा, 16-31 दिसम्बर 2024 (16-31 Dec. 2024). • वर्ष 4 (Year-4), • अंक 15 • पृष्ठ 4 (Page-4) • मूल्य रु.2 (Price 2/-)

काशी-मथुरा, संभल शाही और अजमेर शरीफ...

मंदिर-मस्जिद विवाद पर क्या कहता है कानून?

नई दिल्ली : अगर किसी देश को नष्ट करना है तो उसकी सांस्कृतिक पहचान को खत्म कर दो। देश अपने आप नष्ट हो जाएगा। भारत पर हमला करने वाले विदेशी आक्रांताओं ने यही किया। इस्लामी आक्रांताओं ने न सिर्फ धन-संपदा लूटी बल्कि भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान को खत्म करने के लिए बड़े पैमाने पर मंदिरों और धार्मिक स्थलों को तोड़ कर मस्जिदें बना दीं। अंग्रेजों का लक्ष्य भी भारत को कमजोर बनाकर यहां के संसाधनों का दोहन करना था। इसलिए उन्होंने भी भारत की सांस्कृतिक पहचान को कमजोर करने के लिए हर संभव प्रयास किए। आक्रांताओं द्वारा नष्ट किए गए धार्मिक स्थल सिर्फ धार्मिक प्रतीक नहीं हैं। एक प्राचीन सभ्यता के तौर पर इनके बिना भारत की पहचान पूर्ण नहीं होती है। अयोध्या, काशी और मथुरा इसके कुछ उदाहरण हैं।

सैकड़ों वर्षों की गुलामी के बाद आज सनातन संस्कृति का पुनरुद्धार हो रहा है। काशी, मथुरा,संभल और अजमेर दरगाह मामले में साक्ष्यों और दस्तावेजों के आधार पर भारत की सांस्कृतिक पहचान के प्रतीकों को हासिल करने का प्रयास हो रहा है। पूजा स्थल अधिनियम,1991 देश में आजादी से पहले से मौजूद धार्मिक स्थलों के स्वरूप को बदलने की अनुमति नहीं देता है। ऐसे में यह पड़ताल का मुद्दा है कि क्या संसद कानून बना कर भारत की सांस्कृतिक धरोहरों पर आक्रांताओं के प्रभुत्व को वैधता दे सकती है?

मंदिर-मस्जिद विवाद पर क्या कहता है कानून? : साल 1991 में कानून बनाकर यह सुनिश्चित किया गया कि देश में धार्मिक स्थलों का जो स्वरूप 15 अगस्त, 1947 को था, उसे बदला नहीं जा सकेगा। लेकिन धार्मिक स्थलों को लेकर जन आकांक्षाओं को इससे दबाया नहीं जा सका था।

2023 में सुप्रीम कोर्ट के फैसले से इस बात की गुंजाइश बनी कि यह पता किया जा सकता था कि किसी धार्मिक स्थल का वास्तविक स्वरूप क्या और क्या बाद में इसे बदला गया है।

इसके बाद धार्मिक स्थलों के पुराने स्वरूप को बहाल करने को लेकर अदालतों में कई दावे पेश किए गए और अदालतों ने इस पर सर्वे के आदेश भी दिए। आइये जानते हैं कि पूजा स्थल अधिनियम, 1991 और अदालतों में चल रहे मंदिर मस्जिद विवाद के बारे में।

पूजा स्थल अधिनियम, 1991 : साल 1991 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिंहा राव की अगुआई वाली कांग्रेस सरकार ने धार्मिक स्थलों से जुड़े विवादों को लेकर भविष्य में होने वाले संघर्ष को रोकने के लिए पूजा स्थल अधिनियम, 1991 में पेश किया। संसद ने इस अधिनियम को पारित किया। यह अधिनियम कहता है कि किसी भी जगह का धार्मिक चरित्र, उसी रूप में संरक्षित किया जाना चाहिए, जैसा वह 15 अगस्त, 1947 को था।

विवादित दावे पर फैसला : 2019 में उच्चतम न्यायालय ने राम जन्म भूमि मामले में अपना फैसला सुनाते हुए पूजा स्थल अधिनियम का समर्थन किया था। न्यायालय ने कहा था कि अधिनियम राजनीतिक व्यवस्था के धर्मनिरपेक्ष चरित्र को बचाने के लिए बनाया गया है।

न्यायालय ने अपने 1994 के फैसले का भी हवाला दिया, जिसमें कहा गया था कि अधिनियम का मकसद यह सुनिश्चित करना था कि इतिहास और उसकी गलतियां वर्तमान और भविष्य को दबाने के लिए उपकरण के तौर पर इस्तेमाल न की जाएं।

फैसले में यह भी कहा गया कि अदालतें हिंदुओं के पूजा स्थलों के खिलाफ मुगल शासकों द्वारा उठाए गए कदमों से पैदा होने वाले दावों को सुनवाई के लिए स्वीकार नहीं कर सकतीं।

ज्ञानवापी पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला : 2023 में उच्चतम न्यायालय ने ज्ञानवापी मस्जिद परिसर में वैज्ञानिक सर्वे की अनुमति दी। इससे दूसरे विवादित पूजा स्थलों पर दावे के लिए कई समूह आगे आए। ज्ञानवापी मामले की सुनवाई करते हुए जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने मई, 2022 में कहा था कि पूजा स्थल अधिनियम किसी धार्मिक स्थल के धार्मिक चरित्र का पता लगाने से नहीं रोकता है।

काशी विश्वनाथ मंदिर-ज्ञानवापी मस्जिद : 1991 में वाराणसी में अदालत में एक याचिका दाखिल करके ज्ञानवापी की जमीन काशी विश्वनाथ मंदिर को देने की मांग की गई। हिंदू पक्ष का दावा है कि जहां ज्ञानवापी मस्जिद है वहां पहले मंदिर था। 17 वीं सदी में मुगल बादशाह औरंगजेब ने मंदिर को ध्वस्त कर दिया था। हालांकि मुस्लिम पक्ष इस बात से इनकार करता है।

कृष्ण जन्म भूमि, मथुरा : 14 दिसंबर, 2023 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि मंदिर से सटी शाही ईदगाह मस्जिद का अदालत की निगरानी में सर्वे कराने की अनुमति दी। हालांकि 16 जनवरी को सर्वे पर रोक लगा दी गई।

रात का अंधेरा, ठंडी हवाएं और पतला-सा कंबल, एम्स में इलाज करवाने के लिए बस स्टॉप पर सो रहा ये परिवार

दिल्ली : राजधानी दिल्ली का एम्स और सफदरजंग हॉस्पिटल पूरे भारत में फेमस है. देश के अलग-अलग कोने से लोग आकर यहां पर अपना इलाज करवाते हैं. लेकिन हालात ऐसे हैं कि लोगों को इलाज के लिए कड़कड़ाती ठंड में भी सड़कों पर सोना पड़ता है. दिल्ली के साउथ एक्सटेंशन बस स्टॉप पर गुजारा करते हुए बिहार से आए गरीब परिवार को एक महीना हो गया है. वो अपना इलाज करवा रहे हैं. लोकल 18 से बात करते हुए उन्होंने अपनी परेशानी बताई.

परिवार के सदस्य लाल बाबू ने बात करते हुए बताया कि वह बिहार के चंपारण जिले के रहने वाले हैं. वो एक छोटे से ठेले पर सब्जी बेचने का काम करते हैं, जिससे उनका परिवार का गुजारा होता है. उनकी बेटी का बहुत दिनों से सिर में दर्द हो रहा था. इसके बाद वो अपने पूरे परिवार यानी कि छोटी-सी लड़की, लड़का और अपनी साली को लेकर इलाज करवाने के लिए दिल्ली के एम्स अस्पताल में आए थे. वो अपनी बेटी को डॉक्टर से दिखाने के बाद जैसे ही वो अपने घर के लिए निकल रहे थे, तभी उनको हार्ट अटैक आ गया. जिसके बाद उनका पूरा परिवार उन्हें लेकर दिल्ली के एम्स हॉस्पिटल मे इलाज करवाने लगा. धीरे-धीरे देखते ही देखते उनका इलाज एक महीने से चला रहा है.

लाल बाबू ने बताया कि वह एक बहुत गरीब परिवार आते हैं, जिस वजह से दिल्ली के सरकारी अस्पताल में इलाज करवाने के लिए आए थे. जहां उन्हें और उनके परिवार को एक अच्छा इलाज मिला. उनके पास पैसे ना होने के कारण वह किसी होटल में नहीं रह रहे है. वह अपना गुजारा एम्स हॉस्पिटल के बाहर साउथ एक्सटेंशन बस स्टॉप पर ही रह कर कर रहे हैं. जहां वह दिन में अस्पताल में अपने इलाज करने के बाद रात के समय अपने पूरे परिवार वालों के साथ बस स्टॉप पर एक पतला-सा कंबल लेकर सोने के लिए आते हैं. इस बस स्टॉप पर केवल एक उनका ही परिवार नहीं, कई मरीज सोते हैं.

रामबाबू की पत्नी शबाना ने बात करते हुए कहा कि उन्होंने 15 दिन से नहाया नहीं है. पूरे परिवार वालों के साथ बस स्टॉप पर गुजरा करना बहुत मुश्किल की बात है. आर्टिकल में वीडियो में आप परिवार के साथ लोकल 18 के साथ बातचीत में क्या कहा देख सकते हैं.

रेलवे ने खर्च किए महाकुंभ तैयारियों हेतु 2 वर्षों में 5000 करोड़ से अधिक : अश्विनी वैष्णव

- **केंद्रीय रेल मंत्री ने महाकुम्भ –2025 की तैयारियों का किया अवलोकन।**
- **प्रयागराज क्षेत्र में सुगम रेल परिचालन के लिए 21 रोड ओवर ब्रिजों और रोड अंडर ब्रिजों का किया गया निर्माण।**
- **महाकुंभ –2025 के दौरान 3000 स्पेशल गाडियाँ सहित 13000 से अधिक रेल गाडियाँ चलायी जाएंगी।**

नई दिल्ली : केंद्रीय मंत्री, रेल, सूचना एवं प्रसारण और इलेक्ट्रॉनिक्स, सूचना प्रौद्योगिकी, श्री अश्विनी वैष्णव ने प्रयागराज क्षेत्र में महाकुम्भ–2025 के लिए की जा रही तयारियों का अवल–ोकन किया। केंद्रीय रेल मंत्री ने प्रयागराज में सबसे पहले झूंसी रेलवे स्टेशन पर चल रहे विकास कार्यों एवं महाकुंभ –2025 की तैयारियों का निरीक्षण किया तत्पश्चात झूंसी स्टेशन के निकट गंगा नदी पर प्रयागराज वाराणसी रेल मार्ग दोहरीकरण कार्य के अंतर्गत बने नए ब्रिज संख्या –111 का निरीक्षण किया। केंद्रीय रेल मंत्री ने निरीक्षण के अगले क्रम में पुनर्विकास योजना के अंतर्गत फाफामऊ स्टेशन पर चल रहे विकास कार्यों का जायजा लिया ओर संबधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये। इसी क्रम में उन्होंने प्रयाग जं स्टेशन का भी निरीक्षण किया और महाकुंभ 2025 की तैयारियों को परखा। इस निरीक्षण के दौरान उन्होंने यात्री सेवा एवं यात्री हितों की दिशा में किए जा रहे सभी रेल कार्यों तथा निर्माणाधीन परियोजनाओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त की तथा इस विषय में संबंधितों को महत्वपूर्ण सुझाव देते हुए आवश्यक निर्देश पारित किए। उन्होंने मेला अवधि में इन स्टेशनों पर यात्री सुविधा संबंधी,आपातकालीन,चिकित्सा तथा आकस्मिक सेवा संबंधी, स्वच्छता और सौंदर्यीकरण संबंधी, यात्री सुरक्षा एवं संरक्षित तथा समयानुसार गाड़ी परिचालन संबंधी सभी व्यवस्थाओं का गहनतापूर्वक अवलोकन किया। इसके साथ ही माननीय रेलमंत्री, मेला के दौरान रेलवे द्वारा निर्धारित की जाने वाली अन्य विशेष तथा वैकल्पिक व्यवस्थाओं से भी भलीभांति अवगत हुए। इसके अतिरिक्त उन्होंने उपस्थित अधिकारियों से यात्री एवं भीड़ प्रबंधन की नीतियों एवं मेला के सुगम और सुचारु रूप से संचालन करने की दिशा में किए जाने वाले अन्य प्रयासों के विषय में भी क्रमबद्ध रूप से जानकारी प्राप्त की। इस दौरान माननीय रेलमंत्री ने फाफामऊ जं से प्रयाग जं तथा प्रयाग जं से प्रयागराज जं. तक विंडो ट्रेलिंग करते हुए रेलपथ की संरक्षा की जानकारी भी प्राप्त की तथा इस अवसर पर इन दोनों स्टेशनों पर उपस्थित जन प्रतिनिधियों तथा स्थानीय नागरिकों से भेंट की।

केंद्रीय रेल मंत्री, श्री अश्विनी वैष्णव ने निरीक्षण के अगले क्रम में प्रयागराज जंक्शन पर महाकुंभ –2025 के लिए की जा रही तयारियों का निरीक्षण किया। ध्यातव्य है कि प्रयागराज जंक्शन को स्टेशन पुनर्विकास योजना के अंतर्गत विकसित किया जा रहा है। केंद्रीय रेल मंत्री ने प्रयागराज जंक्शन पर यात्री आश्रय का निरीक्षण कर आश्रय के बाहर टिकट काउंटर, कलर कोडिंग और उपलब्ध साइनेज का जायजा लिया। यात्री आश्रयों में कलर कोडिंग की व्यवस्था की गई है। इसे कलर कोडिंग के अनुसार यात्री दिशावर यात्रा के लिए सुनिश्चित प्लेटफार्मों पर गाएँगे और अपने गंतव्य की ओर यात्रा करेंगे। केंद्रीय रेल मंत्रीने यात्री आश्रय में खानपान, प्रकाश, पेयजल, चिकत्सा बूथ, जन सुविधाएँ, सुरक्षा व्यवस्था को बारीकी से देखा। महाकुंभ –2025 के दौरान स्टेशन पर यात्रियों के प्रवेश और निकास योजना पर जानकारी के साथ स्टेशन पर यात्रियों को दिशावार यात्रानुसार गेट से प्रवेश से लेकर गाड़ी तक भेजने की व्यवस्था, यात्रियों को टिकट काउंटर पर भेजना, यात्रियों को टिकट उपलब्ध करवाना, सही गाड़ी की जानकारी देना, भीड़ को नियंत्रित करना, यात्रियों के प्लेटफ़ॉर्म पर पहुँचने पर उन्हें सुरक्षित रूप से गाड़ी के अंदर भेजना और गाड़ी में पर्याप्त यात्री हो जाने पर गाड़ी को प्रस्थान करवाने के लिए प्लेटफार्म से कंट्रोल टावर को सूचना भेजना और अन्य विभागों से समन्वय की कार्यप्रणाली पर भी जानकारी ली।

केंद्रीय रेल मंत्री, श्री अश्विनी वैष्णव ने प्रयागराज जंक्शन की सुरक्षा प्रणाली और आपात स्थिति के लिए की गई तैयारियों की भी जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान केंद्रीय रेल मंत्री ने रैपिड एक्शन टीम एवं क्विक रेस्पोंस टीम और फायर फाईटिंग टीम के कर्मचारियों से बातचीत कर उनकी कार्यप्रणाली को परखा, और बेहतर कार्य करने के लिए आवश्यक निर्देश भी दिए। स्टेशन पर यात्रियों की सुविधा के लिए एवं आपात स्थिति से निपटने के लिए रैपिड एक्शन टीम एवं क्विक रिस्पांस टीम और फायर फाइटिंग टीम की व्यवस्था की गयी है। आपात स्थति के लिए सिविल लाइन साइड में फुट ओवर ब्रिज संख्या –3 के निकट एवं सिटी साइड में रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट के निकट रैपिड एक्शन टीम टीम तैनात रहेगी। रैपिड एक्शन टीम में रेलवे के विभिन्न विभागों के 20 कर्मचारी किसी भी स्थिति से निपटने के लिए 247 तैयार रहेंगी।

केंद्रीय रेल मंत्री, श्री अश्विनी वैष्णव ने निरीक्षण के अगले क्रम में 18 स्क्रीन से सुसज्जित सीसीटीवी कक्ष युक्त मेला टॉवर का निरीक्षण किया। मेला टॉवर से भीड़ नियंत्रण, गाड़ियों का आगमन–प्रस्थान, सिविल प्रशासन के साथ समन्वय, आपात स्थिति से निपटना, यात्रियों की सहायत इत्यादि जैसे कार्यों को किया जाता है। मेला टॉवर के सीसीटीवी कक्ष में प्रयागराज क्षेत्र के स्टेशनों और सिविल एरिया के सीधे प्रसारण को देखकर नियंत्रण और निर्देश की प्रणाली स्थापित की गयी है। कक्ष में तैनात कर्मचारियों से सीसीटीवी के विषय में जानकारी ली और बेहतर समन्वय और त्वरित कार्यप्रणाली के लिए आवश्यक निर्देश दिए।

केंद्रीय रेल मंत्री, श्री अश्विनी वैष्णव ने निरीक्षण के अगले क्रम में स्टेशन रिडेवलपमेंट के अंतर्गत विकसित किये जा रहे प्रयागराज जंक्शन के निर्माण कार्यों का निरीक्षण किया और कार्य को गुणवत्ता और समय के साथ पूर्ण करने के निर्देश दिए। केंद्रीय रेल मंत्री, श्री अश्विनी वैष्णव ने प्रयागराज जंक्शन पर आयोजित प्रेस वार्ता में मीडिया कर्मियों को संबोधित करते हुये कहा कि महाकुंभ –2025 में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के आने के संभावना को देखते हुये गत 2ट वर्षों से वृहत स्तर पर तैयारियाँ चल रही हैं। इससे संबंधित कार्यों में गत 2 वर्षों में प्रयागराज क्षेत्र में 5000 करोड़ रुपये से अधिक धनराशि खर्च की गई है। इस धनराशि से बड़े स्तर पर विकास किए गए हैं। प्रयागराज क्षेत्र में सुगम रेल परिचालन के लिए 21 रोड ओवर ब्रिजों और रोड अंडर ब्रिजों का निर्माण किया गया है। महाकुंभ –2025 के दौरान 3000 स्पेशल गाडियाँ सहित 13000 से अधिक रेल गाडियाँ चलायी जाएंगी जब कि गत कुम्भ मेला में 7000 गाड़ियों का संचालन किया गया था। छोटी दूरी के लिए बड़ी संख्या में मेमू ट्रेन का इंतजाम किया जा रहा है। महाकुंभ –2025 के रेगुलर गाड़ियों में दोनों तरफ इंजन लगाया जाएगा जिससे समय की बचत होगी। बनारस से प्रयागराज के मध्य दोहरीकरण किया गया है इसी खंड में गंगा नदी पर 100 वर्ष बाद नया ब्रिज बने गया है। एवं फाफामऊ–जंघई के मध्य दोहरीकरण होने से ट्रेन परिचालन क्षमता में वृद्धि हुयी है। महाकुंभ –2025 के दौरान बेहतर सुविधाओं के लिए विभिन्न स्टेशनों पर 43 स्थायी होल्डिंग एरिया का निर्माण किया गया है। प्रयागराज क्षेत्र के सभी स्टेशनों पर सभी फुट ओवर ब्रिजों पर एकदिशीय यातायात की व्यवस्था की गई है। इस अवसर पर उन्होंने मीडिया कर्मियों को महाकुंभ के दौरान दिशावार कलर कोडिंग व्यवस्था और टिकटिंग व्यवस्था के बारे में भी बताया।

इसी क्रम में माननीय रेल मंत्री महोदय ने डीएफसी के कंट्रोल सेंटर का भी निरीक्षण किया। इसके उपरांत मंत्री महोदय ने उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में रेल अधिकारियों के साथ बैठक की। इस दौरान उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि, यदि आवश्यकता हो तो होल्डिंग एरिया की क्षमता और बढ़ाई जाए एवं मेला अवधि में अधिकतम ट्रेनो का परिचालन किया जाए। इसी के साथ ही अयोध्या, चित्रकूट एवं विंध्याचल के लिए भी ज्यादा से ज्यादा ट्रेन चलाने की बात की। उन्होंने चित्रकूट एवं विंध्याचल में भी होल्डिंग एरिया विकसित करने के निर्देश दिए। इसी क्रम में श्री वैष्णव ने स्वच्छ एवं प्लास्टिक फ्री कुंभ की दिशा में प्रयास करने की बात कही। उन्होंने मेडिकल के संबंध यदि आवश्यकता हो तो बाहर से अतिरिक स्टाफ हायर करने और यात्रियों को बेहतर से बेहतर चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के निर्देश दिए। अपने संबोधन में रेल मंत्री महोदय ने कानपुर एरिया को बुंदेलखंड, लखनऊ एवं अयोध्या के दिशा में जाने वाले यात्रियों के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए वहां भी क्षमता बढ़ाने के लिए प्रयास की आवश्यकता जताई। अंत में उन्होंने जिला प्रशासन एवं रेल विभाग को समन्वय से काम करने के निर्देश दिए और मेला को सुचारु और सुरक्षित बनाने के सभी प्रयास करने की बात कही। इस दौरान अध्यक्ष रेलवे बोर्ड श्री सतीश कुमार सहित उत्तर मध्य रेलवे, उत्तर रेलवे एवं पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक एवं संबंधित मंडल रेल प्रबंधकों के साथ अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

कमिश्नर कप फुटबॉल टूर्नामेंट 2024 का आयोजन किया गया

हावड़ा : (बैधनाथ झा)। 'फुटबॉल खेल' केवल एक खेल नहीं है, यह एक बंगाली जुनून है। इसलिए, हावड़ा पुलिस आयुक्तालय ने 'सभी खेलों में सर्वश्रेष्ठ बंगाली तुमी फुटबॉल' के माध्यम से पुलिस और आम लोगों के बीच अच्छे संबंध बनाने के लिए इस फुटबॉल खेल का आयोजन किया है।यह फुटबॉल खेल कमिश्नरेट के उत्तर, मध्य और दक्षिण डिवीजन के सभी पुलिस स्टेशनों के बीच खेला गया है और सभी पुलिस स्टेशनों के क्लबों के साथ कमिश्नर कप फुटबॉल टूर्नामेंट किया गया जिसमें संकरईल थाना ने विजय हासिल की विजय टीम को पुरस्कृत किया गया।

शरीर में सी चुप होकर किया जा रहा है इलाज, इसका नाम है एक्युपंक्चर

हावड़ा : (बैधनाथ झा)। आईआरआईएम (इंडियन रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर इंटीग्रेटेड मेडिसिन) के डॉक्टर बिना दवा के कई लोगों का इलाज कर उन्हें रोगमुक्त कर रहे हैं। एक्यूपंक्चर और योग प्राकृतिक चिकित्सा और शिक्षा के इस संस्थान ने 1981 में कोलकाता में एक किराए के मकान से अपनी यात्रा शुरू की थी। की शुरुआत भारत में एक्यूपंक्चर उपचार के जनक डॉ. विजय कुमार बोस के कुछ छात्रों ने की थी। उनमें से एक थे डॉ. देबाशीष बख्शी। 1990 में उनका संगठन कोलकाता से अंदुल हावड़ा में लाया गया, जहाँ से यह एक क्लब बन गया। स्वयंसेवक डॉक्टरों ने 1998 में मौरीग्राम स्टेशन के बगल में एक चिकित्सा और अनुसंधान केंद्र बनाया। लेकिन यह केंद्र आग लगने से नष्ट हो गया, इसके बाद भी देबाशीष बाबू और

उनके सहयोगियों ने नए उत्साह के साथ फिर दो घर बनाए।फिर धीरे–धीरे लोगों के सहयोग से भवन का निर्माण किया गया। यहां प्रतिदिन दूर–दूर यहां तक कि दूसरे राज्यों से मरीज आते हैं और कई लाइलाज बीमारियों का इलाज करते हैं जो एलोपैथी इलाज से ठीक नहीं हो पाती थीं बहुत पैसे लगते थे।एक्यूपंक्चर से उच्च रक्तचाप, मधुमेह, पेट की समस्याएं, शरीर का दर्द, त्वचा रोग, तंत्रिका संबंधी रोग ठीक हो जाते हैं। सुखदेव चंद्र दास नामक मरीज ने कहा कि वह यह महीने से पीठ दर्द से पीड़ित हैं, लेकिन कई एलोपैथिक दवाएं ली पर काम नहीं कर रही हैं से ईलाज करवाने से लाभ हुआ। विनोद विश्वास ने कहा कि वह यहां अपने शरीर के कई रोगों को लेकर आए थे इलाज के बाद यहां आने के बाद वह ठीक हो रहे हैं। देबाशीष बख्शी ने कहा कि उन्होंने एक्यूपंक्चर और योग प्राकृतिक चिकित्सा के जरिए इस बीमारी को दूर किया।जो केंद्रीय तंत्रिका तंत्र पर काम करता है। एलोपैथी में दवाओं के दुष्प्रभाव होते हैं लेकिन दवा रहित उपचार में लागत कम होती है। भवनों में वर्षा के जल का उपयोग किया जाता है।और कृषि भी की जाती है। यहां से चिकित्सा सिख कर कई छात्र देश के विभिन्न हिस्सों में इलाज कर रहे हैं। में शोध के लिए एक पुस्तकालय है और देश में एकमात्र संग्रह है। देबाशीष बख्शी ने कहा कि एलोपैथी के बाद एक्यूपंक्चर थेरेपी दुनिया भर में लोकप्रिय है। वे चाहते हैं कि इस इलाज को केंद्र सरकार से पूरी मान्यता मिले.मेडीकल कालेज का निर्माण करें।डॉक्टरों को यह दर्जा भी मिले, इसका आंदोलन जारी है।

आम लोगों की सुविधा के लिए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने हावड़ा में शैलेन मन्ना सारणी का शुभ उद्घाटन किया। साथ ही आदरणीय शैलेन मन्ना के चित्र पर माल्यार्पण किये। उन्होंने कहा यह सड़क जल्द ही सुफल बांग्ला, विभिन्न स्वयं सहायता समूहों के स्टॉल, बच्चों के खेल क्षेत्र और विभिन्न सौंदर्यीकरण से भर जाएगी।

अटल विचारधारा को देश-विदेश में फैलाने के लिए पटना से हो रही अटल मार्च की शुरूआत

पटना : अटल सिर्फ एक व्यक्ति का नाम नहीं, बल्कि एक विचारधारा है। उनका सम्मान करना हम सबका दायित्व है। आज की पीढ़ी को उनके विचार और चिंतनधारा को समझने की जरूरत है। इसी उद्देश्य से पटना में पहली बार अटल मार्च का आयोजन होने जा रहा है। अटल मार्च' की शुरुआत 25 दिसंबर, 2024 को पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर पटना से होगी। यह मार्च अटल विचारधारा को देश-विदेश में फैलाने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। इस मार्च का आयोजन मिथिलालोक फाउंडेशन और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त ब्रिटिश लिंग्वा द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। अटल मार्च का उद्देश्य पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन, कार्य और योगदान को याद करना है, जिन्होंने प्रधानमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल में मैथिली भाषा को भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया। वह मैथिली, जो कि माता सीता की भाषा है, अत्यधिक समृद्ध है।

यह मार्च राजेंद्र नगर टर्मिनल से प्रारंभ होकर राजनिवास तक जाएगा,जहां बिहार के राज्यपाल श्री राजेन्द्र अर्लेकर को एतत विषयक ज्ञापन सौंपने के साथ समाप्त होगा। गौरतलब है कि इस तरह का पदयात्रा कार्यक्रम आने वाले दिनों में राज्य के सभी जिलों में आयोजित किया जाएगा। इस मार्च का उद्देश्य वाजपेयी के भारतीय राजनीति में किए गए महान योगदानों, उनके दूरदृष्टि नेतृत्व और देश पर उनके दीर्घकालिक प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। यह कार्यक्रम राज्य के युवाओं को प्रेरित करने का भी लक्ष्य रखता है, जिसमें अटल जी के आदर्शों और नेतृत्व के सिद्धांतों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया जाएगा।

इस मार्च का नेतृत्व डॉ. बीरबल झा, प्रसिद्ध लेखक, सामाजिक उद्यमी और ब्रिटिश लिंगुआ के संस्थापक करेंगे। डॉ. झा, जो सामाजिक कारणों और शिक्षा के प्रचार-प्रसार के प्रति प्रतिबद्ध हैं, इस मार्च के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, ताकि अटल बिहारी वाजपेयी की धरोहर भविष्य की पीढ़ियों तक पहुंचे। इस मार्च में युवाओं की सक्रिय भागीदारी होगी, जिनकी बड़ी संख्या में इस कार्यक्रम में शामिल होने की उम्मीद है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल वाजपेयी के योगदानों को सम्मानित करना है, बल्कि उनकी 'अटल विचारधारा' से युवाओं को जोड़ना भी है। यह दार्शनिक रूपरेखा राष्ट्रीय एकता, मजबूत लोकतांत्रिक शासन, शिक्षा और सामाजिक सद्भाव के महत्व जैसी मूल्यों को बढ़ावा देती है।

मार्च का समापन एक बैठक के रूप में होगा, जहाँ प्रतिभागी वाजपेयी के दर्शन के बारे में अधिक जान सकेंगे, साथ ही उनके कार्यकाल के दौरान उनके द्वारा अपनाए गए सिद्धांतों पर चर्चा और चिंतन कर सकेंगे। 'अटल बिहारी वाजपेयी केवल एक व्यक्ति नहीं थे; वह अपने आपमें एक विचारधारा थे। उन्होंने अपने असाधारण विचारों, आदर्शों और कार्यों के माध्यम से भारत के लोगों को एकजुट करने का सपना देखा। उनके कुछ विलक्षण परियोजनाओं ने देशवासियों को एकजुट किया, जैसे कि स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना के तहत शहरों को जोड़ना, नदियों को जोड़ना और दो दूरस्थ भूमि खंडों जोड़ने के लिए पुलों का निर्माण आदि। कोशी नदी का पुल इसका एक उदाहरण है।' डॉ. बीरबल झा, आयोजक, अटल मार्च ने उपरोक्त बातें कहीं।

इस कार्यक्रम का लक्ष्य अटल बिहारी वाजपेयी के सिद्धांतों को भविष्य की पीढ़ियों तक पहुँचाना है। निश्चय ही यह कार्यक्रम युवाओं और राज्य के नागरिकों के यादगार साबित होगा। अटल जन्म शताब्दी स्मारक व्याख्यान भी उसी दिन पटना के कॉलेज ऑफ कॉमर्स में आयोजित किया जाएगा, जो भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की पुण्यतिथि पर 'गुड गवर्नेंस डे' के रूप में मनाया जाएगा। ब्रिटिश लिंग्वा, देश की प्रमुख अंग्रेजी संचार कौशल संस्था, और मिथिलालोक फाउंडेशन, समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास के लिए काम करने वाला एक संगठन, इस भव्य कार्यक्रम का आयोजन करेगा ।

कार्यक्रम में बिहार विधान परिषद के अध्यक्ष श्री अवधेश नारायण सिंह मुख्य अतिथि के रूप में करेंगे और पटना साहिब से सांसद व पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री रवि शंकर प्रसाद कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहेंगे। इसके साथ ही प्रमुख समाजसेवी और शिक्षक जैसे विधानसभा सदस्य डॉ संजीव चौरसिया , विधान परिषद सदस्य डॉ प्रमोद चंद्रवंशी, बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रोफेसर अरुण कुमार भगत और पटलिपुत्र विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार प्रोफेसर नागेंद्र कुमार झा भी इस कार्यक्रम में भाग लेंगे, जहां वे अटल जी के योगदानों और उनके विचारों पर चर्चा करेंगे।

द कलकत्ता एंग्लो गुजराती स्कूल में वार्षिक प्रदर्शनी का आयोजन

कोलकाता : 'द कलकत्ता एंग्लो गुजराती स्कूल के प्रांगण में वार्षिक प्रदर्शनी कार्यक्रम का आयोजन किया। इस प्रदर्शनी का विषय भारत की असीम एकता को दर्शाना था अत: भारतीय अखंडता को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम का विषय 'भारतीय राज्य' दिया गया। इस उत्साहपूर्वक प्रदर्शनी का आयोजन प्रवीण भाई पोपट (मुख्य अध्यक्ष केंद्र समिति) और जय कामदार (मुख्य सचिव) चदेश मेघाणी (सह सचिव), परिमल अजमेरा (सह सचिव) आदि ने किया था ।कार्यक्रम का उद्घाटन परिमल अजमेरा (सहसचिव) चंद्रेश मेघाणी (सहसचिव),ओर गीतांजलि बेन ठक्कर (पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक विभाग अध्यक्ष), परेश दफ्तरी (विद्यालय प्रबंधक समिति), जीमी सैनी (प्रधानाचार्या) जयदीप मुखर्जी (प्रमुख विभाग अध्यक्ष माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक), भागवती चौधरी (मुख्य अध्यक्ष प्राथमिक विभाग), सोनल जगानी (पूर्व प्राथमिक विभाग) प्रीति पॉल (पूर्व प्राथमिक मुख्य अध्यक्ष) अनिता राय (मुख्य अध्यक्ष कंप्यूटर विभाग) अतिरिक्त गणमान्य अतिथि उपस्थित हुए।

इस अवसर पर सुशील पोद्दार, दिनेश जैन, विनोद संचेती, विकास बजाज, दीपक गठानी, मयूर सेठ, शांतनु बर्मा ने भावी पीढ़ी को प्रोत्साहित करते हुए अपने बहुमूल्य विचारों को साझा किया। प्रदर्शनी द्वारा भारत के सात राज्यों की असीम संस्कृति को दर्शाया गया। इस मौके पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा विज्ञान एवं गणित तर्क एवं तथ्यों के साथ प्रयोगों को प्रस्तुत किया गया। इस कार्य मै सभी शिक्षक एवम शिक्षिका पूरा सहयोग रहा । संस्था के सह सचिव चंद्रेश मेघाणी ने सब आये हुऐ अतिथि गण एवम सभी का आभार व्यक्त किया ।

गृहिणी ने की आत्महत्या

हावड़ा : हावड़ा पुलिस कार्यालय के एक कर्मचारी प्रदीप झा ने कर्ज चुकाने के लिए फ्लैट बेच दिया था। इसी वजह से उनकी पत्नी इसे स्वीकार नहीं कर पाई कल शिवपुर के शांत सिंह मोर इलाके में अपने फ्लैट में दो बच्चों के साथ आत्महत्या कर ली। रूबी झा (27) नाम की एक गृहिणी का लटकता हुआ शव कल शाम सांता सिंह मोड़ इलाके में एक आवासीय फ्लैट से बरामद किया गया था, उनके दो बेटे चिराग झा (11) और यह झा उर्फ बंकू झा (4) को शिबपुर थाने की पुलिस ने बेहोशी की हालत में बरामद किया था। जब तीनों को अस्पताल ले जाया गया तो डॉक्टरों ने महिला और उसके बड़े बेटे को मृत घोषित कर दिया। छोटे बेटे को गंभीर हालत में एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया।पुलिस सूत्रों के मुताबिक, प्रदीप झा हावड़ा सिटी पुलिस कार्यालय का कर्मचारी है. उसे कुछ दिन पहले ही यह नौकरी मिली थी. उसकी पत्नी ने अपने दो बच्चों को गला घोंटकर मारने की कोशिश की. लेकिन उसके पत्नी ने ऐसा क्यों किया इस पर प्रदीप ने झा ने बताया कि वह एक निजी कंपनी में काम करता था . किसी तरह परिवार चल रहा था। उसके बाद मां के इलाज में काफी खर्च हो गया। उस पैसे को चुकाने के लिए उन्होंने अपनी पत्नी से बात करके फ्लैट बेचने का फैसला किया।रूबी के पिता के घर वाले इस बात को स्वीकार नहीं कर सके. प्रदीप बाबू ने कहा कि फ्लैट बिक चुका है और रजिस्ट्री भी हो चुकी है, इसलिए करने को कुछ नहीं है. जब उन्होंने अपनी सास से दूसरा फ्लैट खरीदने के लिए पैसे मांगे तो उनकी पत्नी को बार-बार मना किया गया और अपमानित भी किया गया.उनकी पत्नी डिप्रेशन से पीड़ित थीं लेकिन उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि इतनी बड़ी घटना घट जाएगी प्रदीप ने बताया कि उसने अपने फ्लैट को बेचकर अपनी देनदारी मिटाने की कोशिश की थी यह घटना ऐसा रूप ले लेगी यह सपने में भी नहीं सोचा था।

एक शाम श्याम के नाम

कोलकाता : कोलकाता के विधान गार्डन में एक शाम श्याम के नाम कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष की कार्यक्रम के आयोजन सफलतापूर्वक के द्वारा संपन्न हुआ जहां पर काफी भारी संख्या में भक्त उपस्थित से और भक्ति रस का आनंद उठाया। आपको बता दे कि पिछले 13 वर्षों से 25 दिसंबर के दिन यह कार्यक्रम किया जाता है जहां श्री श्याम को 56 प्रकार के भोग लगाए जाते हैं विधिवत पूजा अर्चना की जाती है और इसके बाद देर रात प्रभु इच्छा तक भजन कीर्तन का आयोजन किया जाता है कोलकाता व कोलकाता के आसपास के रहने वाले काफी सारी संख्या में भक्त श्री श्याम प्रभु के एक झलक पाने की लालसा लिए हुए यहां पहुंचते हैं और यहां पर दर्शन के उपरांत भक्ति रस का पान करते हैं साथ ही आयोजन के द्वारा उन्हें भजन कीर्तन में आए हुए भक्तों को किसी तरह की कोई असुविधा न हो इसका विशेष ख्याल रखा जाता है और यहां पर प्रसाद का भी वितरण किया जाता जहां हजारों की संख्या

में भक्ति प्रसाद ग्रहण करते हैं संस्था के एक सदस्य सुजीत अग्रवाल ने बताया कि पिछले 13 वर्षों से लगातार कार्यक्रम किया जा रहे हैं और आने वाले दिनों में भी किए जाएंगे इसके साथ ही उन्होंने बताया कि साल भर संस्था की ओर से किसी न किसी तरह के छोटे बड़े कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है जो मानवता के साथ जुड़ा हुआ रहता है वहीं उन्होंने बताया कि बग्रान में संस्था की ओर से जमीन की खरीद की गई है वहां जल्द ही आने वाले वर्ष में श्री श्याम की कृपा से कार्यक्रम आयोजन किया जाए।

स्वस्थ रहने के लिए जरूरी कमर को सीधा रखना

फिटनेस को लेकर सजग लोगों के बीच इन दिनों पोस्चर करेक्टर ब्रेस की खूब चर्चा है। यह एक ऐसा बेल्टनुमा उपकरण है, जो हमारे शरीर की खराब मुद्रा को कुछ हद तक ठीक करने में मदद करता है। इससे गर्दन, कंधों और पीठ का संरेखण बेहतर बनता है। दफ्तर में बहुत लंबे समय तक गलत मुद्रा में बैठने के कारण होने वाले पीठ और गर्दन के दर्द को कम करने में भी यह थोड़ी मदद करता है। वैसे, मुख्यतः इसे हमारी खराब मुद्रा को ही बेहतर बनाने के लिए डिजाइन किया गया है। कठोर प्लास्टिक या धातु के फ्रेम से बना यह उपकरण उन लोगों की पीठ और कंधों के चारों ओर से कसकर रखता है, जिनकी लगातार डेस्क पर झुककर बैठने के कारण कमर और कंधे आगे की तरफ लचक गए होते हैं। इस पोस्चर करेक्टर ब्रेस में खूब सारी पट्टियां होती हैं, जो सिर के ऊपर से आकर कमर को चारों तरफ से कसती हैं। बचपन में हमारे मां-बाप, बड़े बुजुर्ग और स्कूल टीचर अक्सर हमें सीधे बैठो या अपने बैठने की मुद्रा को ठीक करो जैसी हिदायतें देते रहते थे। हकीकत यह है कि वे लोग बिल्कुल सही कह रहे होते हैं।

अक्सर हमारे बैठने के गलत तरीके की आदत बचपन में ही पड़ जाती है। अगर हम बचपन में इस बात को समझ लें कि कुर्सी में झुककर बैठना हमारी शारीरिक मुद्रा के लिए बहुत खराब आदत है, तो आगे चलकर हमें इस तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा, जो शरीर के बिगड़े हुए पोस्चर की समस्या होती है। वास्तव में, लगातार कुर्सी में आगे झुककर बैठने या घंटों लैपटॉप या किताबों में झुककर लिखने, पढ़ने आदि से हमारे बैठने का ढंग धीरे-धीरे गलत हो जाता है। लगातार आगे की तरफ झुके रहने के कारण हमारी कमर सीधी नहीं रह पाती, जबकि स्वस्थ रहने के लिए कमर का सीधा होना बहुत जरूरी है। लगातार गलत मुद्रा में बैठने के कारण बचपन में तो ज्यादा परेशानी नहीं महसूस होती, लेकिन जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, सिरदर्द, कमर दर्द, जोड़ों में अकड़न और गर्दन में खिंचाव जैसी परेशानियां घेर लेती हैं। यह समस्या आजकल ज्यादातर समय कंप्यूटर और लैपटॉप में काम करने के कारण इतनी बढ़ चुकी है कि हर चौथा कामकाजी व्यक्ति गलत पोस्चर की शारीरिक समस्याओं का शिकार है। इस समस्या से बचाव के लिए और किसी हद तक बिगड़ चुके पोस्चर को सही करने के लिए बाजार में कई तरह के उपकरण सामने आए हैं, जिनमें इन दिनों सबसे ज्यादा लोकप्रिय पोस्चर करेक्टर ब्रेस है। यह वास्तव में चेस्ट कोट या जैकेटनुमा होता है। इसके पहनने से कमर से लेकर छाती तक का हिस्सा सीधा या सटकर रहता है। हालांकि, नेक ब्रेस यानी गर्दन में पहने जाने वाले पट्टे से तो हम बहुत लंबे समय से परिचित हैं, जो गर्दन के लिए वही काम करता है, जो कमर के लिए पोस्चर ब्रेस करता है।

यूं तो शरीर के और भी हिस्सों को गलत मुद्राओं के चलते जो परेशानियां पैदा हो रही हैं, उनसे बचाव के लिए अब बाजार में कई तरह के ब्रेसेज आ गए हैं। लेकिन कंधों से लेकर कमर तक को सीधा रखने का सबसे स्मार्ट उपकरण इस समय बाजार में यही पोस्चर करेक्टर ब्रेस है। इसकी पूरी दुनिया में खूब मांग है। इससे मदद भी मिल रही है। लेकिन सिर्फ इसके भरोसे रहने से ज्यादा फायदा नहीं होता। इसका इस्तेमाल करते हुए जब हम लगातार खुद भी दिन के ज्यादातर समय कमर सीधी करके बैठने की कोशिश करते हैं, नियमित एक्सरसाइज और सोने की मुद्रा पर भी ध्यान रखते हैं, तो कहीं जाकर गलत मुद्रा के असर से बच पाते हैं। वैसे, जहां इस तरह के ब्रेस के कई फायदे हैं, तो कुछ नुकसान भी हैं। इसलिए जानकार कहते हैं कि प्राकृतिक तरीके से ही कमर को सीधा रखा जाए तो ज्यादा बेहतर है। मगर इस निष्कर्ष से भी सभी जानकार एकमत हैं कि यह ब्रेस जिस तरह से हमारे कंधों को पीछे की तरफ खींचकर रखता है, उससे फर्क तो पड़ता है। रीढ़ की हड्डी को सीधा रखने में यह वाकई मददगार है। इससे मांसपेशियों और जोड़ों पर तनाव भी कम रहता है।

यहां तक कि कुछ सावधानियों के साथ इस पोस्चर करेक्टर ब्रेस को हम बिस्तर पर भी पहने रख सकते हैं। इससे रात में सोते समय सही मुद्रा में बने रहने में मदद मिलती है। रात में टेढ़ा-मेढ़ा होकर सोने में जो हमारी कमर को परेशानी होती है, उससे हम बच जाते हैं। लेकिन इसे पहनकर सोने के कई जोखिम भी हैं। इसलिए अव्वल तो पोस्चर ब्रेस के साथ सोने से बचना चाहिए, और अगर शरीर की बेहतरी के लिए पहनकर सोएं तो न सिर्फ सजग रहने की जरूरत है, बल्कि सही गद्दा और सही तकिया भी चुनना चाहिए

तृणमूल कांग्रेस ने 28वा स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया

कोलकाता : राज्य भर मे टीएमसी ने स्थापना दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक व सामाजिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, कार्यक्रम के पहले ध्वाजारोहण किया गया कोलकाता के 21 नंबर वार्ड के ब्लॉक में तृणमूल कांग्रेस का स्थापना दिवस जुझारू नेता पप्पू तिवारी के नेतृत्व में सफलता पूर्वक मनाया गया। इस दौरान रक्त दान शिविर, आंख चेकअप के अलावा कई अन्य चेकअप का आयोजन के साथ ही कंबल वितरण, जरूरत मंदों को सिलाई मशीन और व्हीलचेयर भी वितरण किया गया। कोलकाता में पार्टी मुख्यालय में चहल-पहल रही, जहां वरिष्ठ नेता ने टीएमसी का झंडा फहराया और पार्टी संस्थापकों को याद किया। इस दौरान युवा विंग ने रैलियां निकालीं जबकि महिला समर्थकों ने बंगाल की समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। पार्टी के गठन पर विचार करते हुए, वरिष्ठ टीएमसी नेताओं ने देश के आम लोगों के कल्याण के लिए अपनी प्रतिबद्धता पर जोर दिये। तृणमूल कांग्रेस के 28 वे स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सांसद सुदीप बंदोपाध्याय, मंत्री शशि पांजा, तृणमूल हिंदी प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक विवेक गुप्ता, पार्षद हिना हाजरा, स्वप्न दास, रॉबिन चटर्जी, पूजा पंजा, सोमनाथ राय चौधरी, संजय उपाध्याय के अलावा आयोजक व वार्ड 21 के अध्यक्ष पप्पू तिवारी मौजूद रहे, सभी गणमान्य अतिथियों का सम्मान किया गया।

लिट्टी चोखा कार्यक्रम का आयोजन

हावड़ा : आवाज़ सामाजिक संस्था परिवार की ओर से विगत कई वर्षों की भांति इस वर्ष भी लिट्टी चोखा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हावड़ा के किंस रोड इलाके में 18वीं लिट्टी चोखा कार्यक्रम का आयोजन संस्था के सभी सदस्यों के अगुवाई में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ है सामाजिक संस्था आवाज़ कई तरह की सामाजिक कार्यों को पूरे वर्ष करती रहती है जिसमें शामिल है अन्नपूर्णा योजना पहली रोटी गाय को और सामाजिक गठजोड़ को मजबूत करना। संस्था के सभी सदस्यों को इस कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु बधाई दी गई।

जादूगोड़ा का जहन्नुम! 200 दिव्यांग, 30 फीसदी महिलाएं बेऔलाद... खाली होते इस गांव का दर्द तो जानिए

रांची : झारखंड के जमशेदपुर से 45 किलोमीटर की दूरी पर एक बदनसीब गांव है, जिसका नाम जादूगोड़ा है. यह पिछले डेढ़ दशकों में जहान्नुगम में बदल चुका है. यहां लोगों ने इतनी तकलीफों को सहा है कि अब उनके आंसू तक सूख चुके हैं. इस गांव में 200 से ज्यादा लोग दिव्यां ग हैं. 30 प्रतिशत महिलाएं बेऔलाद हैं. लोगों के पैर फूल रहे हैं. जंगलों और पहाड़ों के बीच बसे इस गांव में ऐसा यूरेनियम खनन के कारण हो रहा है. यहां कोई लंगड़ा है तो कोई बोल नहीं पाता. पिछले 10 स 15 सालों में जादूगोड़ा जहान्नुम में बदल गया है. लोग गांव छोड़कर भागने को मजबूर हो गए हैं.

जंगलों और पहाड़ों के बीच बसे इस गांव की कहानी का एक एक हिस्सा आपको देखना और समझना चाहिए. ये समझना चाहिए कि कैसे ये गांव तकलीफ़ों के समंदर में समा गया और सिस्टम सब कुछ आंख बंद करके देखता रहा. पिछले डेढ़ दशक में एक दो परिवारों की ज़िंदगी दुश्वार नहीं हुई. गांव का गांव इन हालात की भेंट चढ़ता गया. किसी की कोख सूनी है. कोई बोल नहीं पाता. कोई चल नहीं पाता. बीमारियों ने ऐसा शिकंजा कसा कि उसके ख़ौफ़नाक पंजों से बच पाना ही चुनौती बन गया है. ये सब कुछ आखिर इस गांव के नसीब में क्यों आया. ये गांव सारंडा के जंगलों के नजदीक आता है. जंगलों और पहाड़ों के बीच जादूगोड़ा बसा हुआ है. यहीं यूरेनियम की खदानें भी हैं, जहां 1967 से खनन चल रहा है. जानकार बताते हैं कि इन्हीं खदानों के कारण 10 किलोमीटर की क्षेत्र में आने वाले गांवों पर बीमारी का असर हुआ है. दावा किया जा रहा है कि यूरेनियम से निकलने वाले रेडिएशन के असर की वजह से ही ऐसा हो रहा है. तनिष उरांव के परिवार की ही तरह लक्ष्मी नामक लड़की की ज़िंदगी भी हंसते खेलते तबाह हो गई. शरीर को लकवा मार चुका है. खून की बेहिसाब कमी है. लेकिन परिवार के पास उन तकलीफ़ों को कम करने का कोई विकल्प नहीं.

3 बार में भी नहीं बन सकी मां

आंकड़े बताते हैं कि बीते 15 सालों में 200 बच्चे दिव्यांग पैदा हुए हैं. जिन्हें जन्मजात बीमारी नहीं हुई वो कुछ दिन बाद दिव्यांग हो गए. गांव की तीस फ़ीसदी महिलाएं ऐसी हैं जिनके बच्चों की मौत कोख में ही हो चुकी है. बताया जाता है कि गांव वाले रेडिएशन की वजह से ही बीमार हो रहे हैं. गांव वेदनाओं से इस कदर घिरा है कि हर एक घर की चौखट पर दर्द की कहानी है. सुशीला पत्रा भी उन्हीं बदनसीबों में आती है, जो अब तक अपनी औलाद का मुंह नहीं देख सकी. एक दो बार नहीं कई बार सुशीला का गर्भपात हो चुका है. सुशीला का 3, 4 और 9 महीने में बच्चा गिर चुका है.

स्वत्वाधिकारी **'बात हिन्दुस्तान की'** (पाक्षिक) पत्रिका के लिए मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती सोनी कुमारी झा, 23 रामकुमार गांगुली लेन, 2रा तल्ला कमरा नं. 203, पोस्ट- बी. गार्डेन, शिवपुर, हावड़ा-711103 (प. बंगाल) फोन नं.: 8902221434 से प्रकाशित एवं चप्पला मुद्रण, 2/3/1, रामजी हजरा लेन, हावड़ा-711101 से मुद्रित, सम्पादक-**उमेश तिवारी,** फोन- 8420899919 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी, ईमेल/वेबसाईट-www.baathindustanki@gmail.com

(Owner, Printer & Publisher of 'Baat Hindustan Ki' : Smt. Soni kumari Jha, 23, Ramkumar Ganguly Lane, 2nd floor, room no-203, PO : B.Garden, Shibpur, Howrah-711103, Mo. 9798848926 & Printed from CHAPLA MUDRAN 2/3/1 Ramji Hazra Lane, Shibpur, Howrah-711101, Editor : **Umesh Tiwari** Mo. 8420899919, Email/Website : www.baathindustanki@gmail.com)